मौखिक गर्भनिरोधक का एक पश्चिमी नारीवादी इतिहास

एक तरीके से, गोली ने एक क्रांतिकारी सोच को जन्म दिया, महिलाओं को अपनी स्वयं की स्वास्थ्य देखभाल में पहले की निष्क्रिय भूमिका पर सवाल उठाने के लिये मज़बूर किया। ज़्यादातर महिलाओं के लिये, गोली इस बात का प्रमाण है कि व्यक्तिगत वास्तव में राजनीतिक है।

लेख- कात्यायनी शर्मा द्वारा 2 जुलाई, 2020

लोककथाओं में गर्भधारण को रोकने के कई उपाय हैं - यौन संबंध बनाते समय छींक को रोकने से लेकर एक प्रारंभिक बाधा विधि के रूप में योनि के अंदर बबूल के पत्तों को रखने तक - और यह इस बात का प्रमाण हैं कि **गर्भनिरोधक विधियां मानव समाज के लिये कोई नई बात नहीं हैं**। जैसे-जैसे दुनिया की आबादी 8 अरब की ओर बढ़ती जा रही है, सस्ती, सुरक्षित और सुलभ गर्भनिरोधक और जन्म नियंत्रण विधियों की निर्णायक भूमिका वैश्विक चेतना में अपना स्थान बना रही है। आज गर्भनिरोधक की उपलब्धता, विशेष रूप से मौखिक गर्भनिरोधक विधियां, जैसे कि गोली, ने ज़्यादातर महिलाओं को उनकी प्रजनन क्षमता पर नियंत्रण का एक उल्लेखनीय स्तर दिया है, जिससे उनके स्वयं के प्रजनन जीवन के निर्णयों पर उनकी अंदरूनी शक्ति (एजेंसी) बढ़ गयी है। यह परिवर्तन, जिसे अक्सर **एक पूर्ण क्रांति** के रूप में वर्णित किया जाता है, नारीवादी समूहों द्वारा दशकों के संघर्ष और पैरवी के बाद आया है। गर्भनिरोधक विधियां, जैसा कि हम आज जानते हैं, नारीवाद के सिद्धांत और व्यवहार दोनों के साथ तैयार और विकसित हुई हैं।

जन्म नियंत्रण के लिये एक नारीवादी आधार

अक्सर मौखिक गर्भनिरोधक गोलियों की "माँ" कही जाने वाली, मार्गरेट सेंगर और कैथरीन मैककॉर्मिक ने महिला गर्भनिरोधक को महिला **मुक्ति के लिये एक आवश्यक अग्रदूत** माना। यह विश्वास इस तथ्य पर आधारित था कि चूंकि महिलाओं पर प्रसव और बच्चे के पालन-पोषण दोनों का अनुपातहीन बोझ होता है, इसलिए उन्हें ऐसे गर्भनिरोधक तक पहुँच की आवश्यकता होती है जिसे वे नियंत्रित कर सकती हैं। सेंगर के लिये, गर्भनिरोधक एक अधिकार था, एक ऐसा दृष्टिकोण जो उन्होंने अपने आस-पास की महिलाओं को और विशेष रूप से अपनी माँ को देखने के बाद विकसित किया - जिन्हें कई गर्भधारण का कष्ट भुगतना पड़ा, जिनपर उनका बहुत कम या कोई नियंत्रण नहीं था। दोनों एक्टिविस्टों ने प्रोजेक्ट को गोपनीय रूप से फ़ंड करते हुये, गोली तैयार करने के लिये वैज्ञानिकों और चिकित्सकों की मदद ली।

कई नारीवादी विद्वानों और शोधकर्ताओं ने यह विचार व्यक्त किया है कि **नारीवादी समूहों द्वारा दबाव** डाले बिना गोली का आविष्कार कभी नहीं होता। प्लानड पेरेंटहुड संस्था की स्थापना सहित परिवार नियोजन के लिये अतिआवश्यकता को स्थापित करने के लिये सेंगर द्वारा किये गये प्रयासों ने **"गर्भनिरोधक मानसिकता"** - एक मूल आधार कि सेक्स का उद्देश्य प्रजनन तक सीमित नहीं है, और महिलाओं को अपनी प्रजनन क्षमता पर नियंत्रण है - की शुरुआत की। यह उस समय के नागरिक समाज के लिये एक अकल्पनीय विचार था, जिसकी नारीवादी समूहों द्वारा तेजी से पैरवी की गयी, और यह पश्चिम में महिला गर्भनिरोधक की मांग की नींव बन गया।

दूसरी लहर का नारीवाद, स्वास्थ्य, और गर्भनिरोधक

1950 के दशक में, कई पश्चिमी देशों ने प्रजनन दर में महत्वपूर्ण और लगातार वृद्धि देखी, जिससे बच्चों के जन्म में विस्फोट (बेबी बूम) हुआ - एक ऐसा युग जो जन्म दर में तेजी से वृद्धि द्वारा चिह्नित है। हालाँकि इस अवधि के दशकों पहले जन्म नियंत्रण के लिये एक नारीवादी मांग उभरी थी, बिना उपयुक्त अंतर के कई गर्भधारण के प्रभाव स्पष्ट नज़र आ रहे थे। जब पहली मौखिक गर्भनिरोधक गोली जून 1960 में अमेरिकी बाजारों में आयी, तो इसने तुरंत ही हंगामा कर दिया। गोली के कई फायदे थे; इसका उपयोग विवेकपूर्ण और किफायती था।

1960 के दशक के दौरान पश्चिमी देशों में महिला मुक्ति आंदोलन अपने चरम पर था। इस अवधि के दौरान महिलाओं के लिये उनके प्रति दृष्टिकोण और सार्वजनिक क्षेत्र में उनके द्वारा प्राप्त अधिकारों के लिये जबरदस्त परिवर्तन हुये। नारीवादी समूहों के लिये, गोली तक पहुँच का मतलब गर्भधारण में देरी करने या जन्म के बीच अंतर रखने पर अधिक नियंत्रण था ताकि वे कैरियर बनाने या उच्च शिक्षा की डिग्री हासिल करने जैसे अन्य लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें, जो पहले असंभव था। एक तरह से, **गोली ने नारीवादी आंदोलन को गति दी**; अधिकांश महिलाओं के लिये इस तक पहुँच का मतलब निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के बीच की रेखाओं का व्यावहारिक रूप से धुंधला हो जाना था।

नारीवादी समूहों के लिये, गोली तक पहुँच का मतलब गर्भधारण में देरी करने या जन्म के बीच अंतर रखने पर अधिक नियंत्रण था ताकि वे कैरियर बनाने या उच्च शिक्षा की डिग्री हासिल करने जैसे अन्य लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

Image Source: *Women's Health*

गोली और यौन मुक्ति आंदोलन

मुक्ति आंदोलन के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की सीमित स्थिति के बारे में सवाल आये। इसने अनजाने में महिलाओं को पक्षपाती और संकीर्ण पारंपरिक यौन भूमिकाओं को सक्रिय रूप से चुनौती देने के लिये प्रेरित किया, जिनके अधीन वे थीं। इस अत्यावश्यक मोड़ के मूल में यह विचार था कि पुरुषों की तरह महिलाएं भी सेक्स का आनंद लेती हैं और उन्हें यह चुनने का अधिकार है कि वे इसमें कब शामिल होना चाहती हैं। यह विचार उग्र सुधारवादी लग रहा था, और मौखिक गर्भनिरोधक को **"यौन क्रांति"** की नैतिकता के बारे में बहस में जल्दी खींच लिया गया था। नारीवादी और रूढ़िवादी समूह महिलाओं की यौन मुक्ति में गोली की भूमिका को लेकर सक्रिय रूप से भिड़ गये, रूढ़िवादी समूह वाले लोगों ने इसे पूरी तरह से **"स्वच्छंद यौन-संबंध"** को प्रोत्साहित करने के लिये दोषी ठहराया।

मौखिक गर्भनिरोधक पश्चिमी समाज में एक अकल्पनीय सफलता हासिल करने में कामयाब रहे - इसने महिलाओं को सेक्स/यौन को प्रजनन से अलग करने का अधिकार दिया। गर्भधारण के डर के बिना महिलाएं अपनी मर्जी से सेक्स करेंगी, इस बढ़ती नैतिक दहशत के बीच, गोली रूढ़िवादी समूहों के लिये बलि का बकरा बन गयी, और पश्चिम में परिवार व्यवस्था के तेज़ी से विफल होने का दोष इसपर लगाया गया। इस बीच, नारीवादी इतिहासकारों का मानना है कि गोली ने यौन क्रांति की शुरुआत नहीं की, **दोनों बस टकरा गये**। कुछ मायनों में, गोली ने पश्चिमी मूल्य प्रणालियों में एक गतिशील परिवर्तन

का नेतृत्व किया और यह विचार कि महिलाओं को अपने यौन जीवन को नियंत्रित करने का अधिकार है, पर तेजी से विचार किया जाने लगा।

जन्म नियंत्रण पर भारतीय बहस

जहाँ जन्म नियंत्रण की उत्पत्ति को दुनियाभर में नारीवादी आंदोलनों द्वारा प्रचारित किया गया है, भारत में बहस काफी भिन्न रही है। दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश होने के नाते, सभी नीति निर्माताओं के लिये यह साफ था कि एक स्थिर अर्थव्यवस्था और विकास दर के लिये सुलभ जन्म नियंत्रण और परिवार नियोजन अनिवार्य है। भारतीय संदर्भ में, जन्म नियंत्रण एक उच्च वर्गीय एजेंडे के बारे में अधिक रहा है जो हाशिए पर और कामकाजी वर्ग की महिलाओं को उनकी प्रजनन क्षमताओं पर नियंत्रण रखने से नियंत्रित करता है। इसके अलावा, भारतीय उच्च वर्ग द्वारा प्रेषित **जन्म नियंत्रण की मुख्यधारा की राजनीति** में जन्म नियंत्रण के लिये नारीवादी लॉबी की विशेषताएं नहीं थीं; इसके बजाय समानता और शारीरिक स्वायत्तता के मूल्य जो पश्चिमी जन्म नियंत्रण आंदोलन के मूल में थे, वो भारत में स्वतंत्रता के बाद के जन्म नियंत्रण में कुछ हद तक दबा दिये गये थे।

हालाँकि, एक मज़बूत लॉबी द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है, जो इस अहसास के बाद उभरी है, कि हाशिए पर रहने वाली महिलाएं अपनी जाति और जेंडर पहचान के कारण दोहरे उत्पीड़न का सामना करती हैं। महिलाओं का अपने वित्त और शिक्षा पर कोई नियंत्रण नहीं था, और इससे अक्सर शारीरिक स्वायत्तता की कमी हो जाती थी। अखिल भारतीय दलित वर्ग महिला कांग्रेस की एक मज़बूत वक्ता, **सुलोचनाबाई डोंगरे**, उन पहली आवाज़ों में से एक थीं, जिन्होंने सुलभ जन्म नियंत्रण की आवश्यकता पर बल दिया। एक अग्रणी दलित नारीवादी, उन्होंने महिलाओं को सीधे संबोधित किया और उनसे अपने और अपने बच्चों के लिये जीवन की गुणवत्ता पर सवाल उठाने के लिये कहा, और उन्होंने एक गहरा विचार पेश किया कि महिलाएं अपनी प्रजनन क्षमता से परे एक इंसान हैं। जबकि जन्म नियंत्रण और गोली का मुख्यधारा का भारतीय विचार पितृसत्तात्मक और कुलीन-वर्चस्व वाला रहा है, सुलोचनाबाई डोंगरे जैसी महिलाओं के विचार आज भी नारीवादी आंदोलनों में गूंजते हैं और उन्हें सुव्यवस्थित करते हैं।

यह उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण है कि भारत में **चेन्नई** जैसे विकसित शहर में भी, यदि महिलाओं के पास आपातकालीन गर्भनिरोधक गोलियों (ईसीपी) को लेने के लिये पर्चा नहीं होता है तो, गर्भनिरोधक गोलियां प्राप्त करना उनके लिये मुश्किल हो जाता है।

चल रही चिंताएं

गोली की भूमिका और उससे जुड़ी बहस को अपने हिस्से के विवादों का सामना करना पड़ा है, अक्सर नारीवादी समूहों से ही। 1970 के दशक के दौरान, **गोली के कुछ दुष्प्रभाव नारीवादी की कड़ी जांच** के दायरे में आये। बहस इस तथ्य की आलोचना से शुरू हुई कि जिन महिलाओं को ये दवाएं लिखीं गयीं थीं, उन्हें संभावित स्वास्थ्य चिंताओं और इसके प्रभावों के बारे में कभी भी सूचित नहीं किया गया था। चूंकि गोली के खिलाफ चिंताएं बढ़ रही थीं, नारीवादी समूहों ने भी इस बात पर प्रकाश डाला और आलोचना की कि कैसे स्वास्थ्य सेवा उद्योग लगभग पूरी तरह से पुरुषों द्वारा चलाया जाता है। महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये आवश्यक वस्तुओं का निर्माण करके पुरुषों द्वारा लिये जा रहे लाभ की आलोचना बढ़ रही थी, अक्सर इसकी कीमत पर। हालाँकि, अपने तरीके से, गोली ने एक क्रांतिकारी सोच को जन्म दिया, जिससे महिलाओं को अपनी स्वयं की स्वास्थ्य देखभाल में पहले की निष्क्रिय भूमिका पर सवाल उठाने के लिये मज़बूर होना पड़ा। ज़्यादातर महिलाओं के लिये, गोली इस बात का प्रमाण है कि *व्यक्तिगत वास्तव में राजनीतिक है।*

संदर्भ

Sanjam Ahluwalia, *Reproductive Restraints. Birth Control in India* 1877-1947, University of Illinois Press, Urbana & Chicago p. 2008, 251।